International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 18-01-2022, Accepted: 02-02-2022, Published: 18-02-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 6-8

महात्मा गाँधी की सतत प्रासंगिकता

शिव हर्ष सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी. जी. कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत लेख में लेखक ने महात्मा गांधी की सतत प्रासंगिकता का विवेचन एवं विश्लेषण किया है द्य दुनियाभर के तमाम लोग गांधी रजी को एवं उनके विचारों को एक ऐतिहासिक कालखंड में सीमित करते हैं द्य यहाँ पर लेखक ने यह दर्शाया है कि वैसे तो आत्मनिर्भर गाँव ,औद्योगीकरण और आधुनिकता के विरोध तथा कामुकता और लैंगिकता सम्बन्धी गांधीवादी विचार वर्तमान परिदृश्य में कुछ ख़ास महत्व के नहीं हैं और लगभग अप्रासंगिक हो चुके है परंतु अहिंसा, अस्मिता, बहुसंस्कृतिवाद, राष्ट्रवाद विषयक गंधी जी के विचर आज भी अत्यधिक समीचीन एवं प्रासंगिक हैं और आगे भी समीचीन और प्रासंगिक रहेंगे। इसके अतिरिक्त, सत्य और अहिंसा पर आधारित गंधी जी की जीवनशैली, उनकी नैतिक–पारदर्शिता तथा निर्भीकता और प्रायोगिक –जीवन्तता मानवता को चिरकाल तक प्रेरित करती रहेगी।

मूल शब्दः प्रासंगिकता. उपादेयता ,भूमंडलीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिकता, अहिंसा, लैंगिकता, अस्मिता, बहुसंस्कृतिवाद, प्रजा –प्रेम, स्वदेश –चिंता, अपवर्जी, नैतिक –पारदर्शिता, प्रायोगिक–जीवंत्तता

प्रस्तावना
देश विदेश के कुछ लोगों के लिए गाँधी एक समयबद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं जो अपने समय के लिए महान थे परन्तु वर्तमान या भविष्य के लिए उनकी कोई ख़ास प्रासंगिकता या उपादेयता नहीं है। उन्होंने आत्मनिर्भर गावों को आदर्श माना जिसका आज के भूमण्डलीकृत विश्व में कोई अर्थ नहीं है। गांधी जी औद्योगीकरण और आधुनिकता के भी खिलाफ थे जो वर्तमान युग की आकांक्षाओं से मेल नहीं खाते। वे जीवन के प्रति अत्यधिक आत्मसंयमी और तपस्वी जैसा दृष्टिकोण रखते थे तथा जीवन के सौंदर्यपरक और अन्य पहलुओं की उपेक्षा करते थे। कामुकता और लैंगिकता पर भी उनके विचार पुराने ढंग के थे जिसका वर्तमान सन्दर्भ में कुछ खास अर्थ नहीं निकलता है। गाँधी जी को अहिंसा की पूर्ण क्षमता और उसकी प्रभावोत्पादकता पर सहज विश्वास था। उन्होंने यह कभी नहीं महसूस किया कि हिटलर और स्टालिन जैसे शासकों के विरुद्ध यह अहिंसा बिलकुल काम नहीं कर सकती थी। गाँधी जी के आलोचक यह भी दलील देते हैं कि मनुष्य की अच्छाई पर गांधी का विश्वास संदेह से परे था और वे मानवीय बुराई का सामना करने में अक्षम थे। चूंकि उनका विश्वास था कि मनुष्य नैसर्गिक रूप से नेक और अच्छा होता है अतः जब लोग बुरा और घृणित व्यवहार करते थे तो उन्हें विस्मय होता था और उनके पास इस मानवीय बुराई का मुकाबला करने के संसाधन नहीं होते थे।
उपरोक्त आलोचनाओं में थोड़ा बहुत सत्य अवश्य है और इसकी संभावना भी बनती है सभी मानव चाहे वे कितने ही महान क्यों कितने न हों अपने समय के शिशु होते हैं जीवन के कुछ क्षेत्रों में उनके विचार कभी–कभार विचित्र एवं विलक्षण हो सकते हैं । गांधी जी भी इसका अपवाद नहीं थे तथापि पांच ऐसे क्षेत्र हैं जहां गांधी जी के विचार मौलिक एवं अनूठे हैं । प्रथम, इस भूमंडलीकृत और तेजी से बदलते विश्व में अस्मिता आईडेन्टिटी का प्रश्न व्यक्ति के लिए एक प्रमुख सरोकार बन जाता है। मैं कौन हूं मैं किन सिद्धांतों का समर्थन करता हूं मेरे नैतिक आश्रय क्या हैं आदि ऐसे प्रश्न हैं जो आजकल प्रायः लोग पूछते हैं कुछ लोगों का मत है कि अस्मिता आदिम और निश्चित है तथा इसे खोजा जा सकता है जबकि अन्य लोगों का मत है कि अस्मिता अत्यधिक लचीली या नमनशील चीज है और हम जो चाहें वह बन सकते हैं द्य इस विषय पर गांधी जी का उत्तर बहुत अधिक समीचीन था द्य गांधीजी के अनुसार सभी मनुष्य विशिष्ट सांस्कृतिक एवं राजनीतिक समुदायों में स्थित होते हैं और इनसे भी गहराई से प्रभावित होते हैं इसके बावजूद मनुष्य चिंतनशील प्राणी भी है और वह स्वयं के तथा दूसरों के अनुभव से सीखता भी है और लगातार अपना पुनर्निर्माण कर सकता है गांधीजी के अनुसार अस्मिता विरासत में भी मिलती है और सृजित भी हो जाती है द्यअस्मिता तात्विक नहीं होती है बल्कि आत्म–सृजन और स्वनिर्माण की सतत प्रक्रिया है। यह अस्मिता अंतहीन प्रयोगों की एक श्रृंखला है जिसमें हर प्रयोग अपने पूर्ववर्ती प्रयोग की नींव पर निर्मित होता है । तथा जब गांधी जी अपनी आत्मकथा का शीर्षक सत्य के साथ मेरे प्रयोग रखते हैं तो इस पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए जैसा कि गांधी जी ने स्वयं कहा है कि हम सत्य दर सत्य विकसित होते हैं और यह यात्रा कभी खत्म नहीं होती है ।
द्वितीय, भूमंडलीकरण विभिन्न संस्कृतियों को साथ ला रहा है अब यह प्रश्न उठता है कि हमें इस सांस्कृतिक विभिन्नता से कैसे पेश आना चाहिए और इसका कैसे सामना करना चाहिए कुछ लोग इन्हें गैर संस्कृतियों की चुनौतियों और खतरों के रूप में देखते हैं तथा अपने आप में सिमटकर रहने का प्रयास करते हैं द्य कुछ लोग इन्हें अत्यधिक उत्साह के साथ इस प्रकार से अंगीकार कर लेते हैं जैसे कि संकृतियाँ उपभोग की वस्तुएं हों ।
इस परिस्थिति के लिए गांधी जी का प्रत्युत्तर अधिक नपा तुला एवं परिपक्व था। प्रत्येक सभ्यता संस्कृति अथवा धर्म अनुपम एवं अद्वितीय है और मानवीय संभावनाओं का विशिष्ट तथा आंशिक दृश्य प्रस्तुत करता है अतः संस्कृतियां आपसी संवाद से लाभान्वित होती हैं। वे एक दूसरे से वह ग्रहण करती हैं जो मूल्यवान एवं सुपाच्य होता है तथा इस प्रक्रिया में

उनका विकास होता है द्य सांस्कृतिक भेद न केवल जीवन की व्यवस्था में वृद्धि करता है बल्कि हमारे बौद्धिक एवं नैतिक विकास की प्रमुख शर्त है । अंतर–सांस्कृतिक संवाद से हमें केवल यही पता नहीं चलता कि हमारे पास और हमारी संस्कृति में अनूठा क्या है बल्कि इस बारे में भी हमारी जानकारी बढ़ाता है कि हमारी सीमाएं क्या हैं तथा हमें दूसरी संस्कृतियों से कुछ ग्रहण करने के अवसर प्रदान करता है गांधीजी ने निःसंकोच ठीक यही किया था द्य गांधीजी ने ईसाई धर्म से तमाम चीजें ग्रहण की और इस प्रक्रिया में भी उन्होंने हिंदू धर्म का ईसाईकरण किया और ईसाई धर्म का हिंदूकरण भी किया द्य गांधी जी ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म से भी बहुतायत से ग्रहण किया तथा थोड़ा बहुत इस्लाम से भी सीखा गांधी जी के विचार किसी एक परंपरा से संबंध नहीं रखते बल्कि उपरोक्त सभी प्रकार के प्रभावों का एक अनुपम और सृजनशील मिश्रण हैं । इस दृष्टि से "गांधी बहु संस्कृतिवाद के संरक्षक संत थे जिन्होंने यह दर्शाया कि हमें एक बहुसांस्कृतिक समाज और बहुसांस्कृतिक विश्व से कैसे पेश आना चाहिए।

तृतीय, गांधी जी यह मानते थे कि अन्याय से लड़ना हमारा कर्तव्य है परंतु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि अन्याय से लड़ने की इस प्रक्रिया में हम स्वयं अन्याय को जन्म न दें। यह विचार सत्याग्रह की आत्मा है जो कि निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं है बल्कि सक्रिय प्रतिरोध है परंतु अन्याय का अहिंसक प्रतिरोध है द्यअन्यायकर्ता और दमनकर्ता ऐसे विरोधी हैं जिनसे लड़ा जाना चाहिए परंतु ये शत्रु नहीं हैं जिन्हें जान से मार दिया जाना चाहिए या अपमानित किया जाना चाहिए द्य इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि गांधीजी के इस विचार को मार्टिन लूथर किंग जैसे लोगों ने अपनाया और उन्हें असाधारण सफलता मिली कदाचित फिलीस्तीनियों ने यदि इजरायली दमन के विरुद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध का तरीका अपनाया होता तो उन्हें अधिक लाभ होता किसी अति सशस्त्र शत्रु से लड़ने का उत्तम तरीका उसके खेल के नियमों के अनुसार चलना नहीं बल्कि खेल के नियम ही बदलकर उसके सारे हथियारों को विफल कर देना है।

चतुर्थ, टैगोर की भांति गांधी भी राष्ट्रवाद और देशभक्ति की यूरोपीय अवधारणाओं से बेहद परेशान थे और उन्होंने अपने समाज के बारे में सोचने का एक वैकल्पिक तरीका प्रस्तुत किया द्य राष्ट्रवाद की यूरोपीय अवधारणा भारत अथवा ब्रिटेन जैसी अमूर्त सत्ता को महिमामंडित करती है द्य यह क्षेत्र को लोगों से ज्यादा महत्व देती है और भूमि के एक टुकड़े की प्रतिरक्षा में लाखों लोगों के बलिदान को भी बहुत छोटी चीज मानती है भले ही यह भूमि वीरान और आवासनीय हो। इस अवधारणा के अंतर्गत राष्ट्र के गौरव एवं शक्ति को जनकल्याण एवं लोगों की खुशहाली से अधिक महत्व दिया जाता है । इसी प्रकार देशभक्ति की यूरोपीय अवधारणा भी जन–केंद्रित न होकर राज्य केंद्रित है तथा इसकी प्रकृति आक्रामक एवं अपवर्जी है।

गांधी ने जनसाधारण को राजनीति के केंद्र में रखा। वे राष्ट्रवाद और देश प्रेम की बात करने के बजाय प्रजा–प्रेम की बात करते थे यह टैगोर के स्वदेश–चिंता अपने समाज के लोगों के प्रति स्नेह एवं उनके कल्याण की चिंता के विचार के समान है । देश अपनी जनता के सिवाय कुछ नहीं होता और जनता का निर्माण मूर्त जीवित व्यक्तियों से होता है यही व्यक्ति किसी की चिंता के केंद्र में होने चाहिए द्य गांधी जी ने कभी भी इस चीज को नजरअंदाज नहीं किया । यह ध्यान देने योग्य है कि जब गांधी को स्वतंत्र भारत के ध्वजारोहण के लिए आमंत्रित किया गया तो उन्होंने इस सम्मान को अस्वीकार किया और इसके बजाय हिंसा–ग्रस्त इलाकों में रहकर लोगों को समझाने के कार्य को अधिक महत्व दिया । सच्चा देशप्रेम या सच्ची देशभक्ति ध्वजारोहण सैन्य परेड और युद्धोन्माद में नहीं बल्कि लोगों के घावों पर मरहम लगाने और प्रत्येक आंख से प्रत्येक आंसू पोछने में होती है जब कोई अपने लोगों से प्यार करता है तो वह उन्हें अच्छी से अच्छी स्थिति में देखना चाहता है और इसलिए वह उनकी चारित्रिक और चाल–चलन संबंधी कमजोरियों की आलोचना करता है यह ध्यातव्य है कि कोई भी भारतीयों का इतना बड़ा आलोचक नहीं था जितना कि गांधी जी यह गांधी के भारतीयों के प्रति प्रेम का प्रतीक था।

अंत में हर चीज से बढ़कर यह बात है कि गांधी जी के जीवन में एक असाधारण भव्यता थी । सत्य और अहिंसा को समर्पित जीवन जीना उनका दृढ़ संकल्प था और उन्होंने सदैव यह सुनिश्चित करना चाहा कि उनका प्रत्येक विचार एवं कार्य इन आदर्शों से अनुप्राणित हो वे जो कुछ भी करते थे उसका बड़ी सावधानी से परीक्षण करते थे और अपने भीतर से असत्य और हिंसा के अवशेषों को निकाल फेंकना चाहते थे भोजन और कामुकता के अपने मशहूर शौक सहित गांधी जी ने एक के बाद दूसरी इच्छा पर विजय प्राप्त की यहां तक कि उन्होंने मृत्यु का भी उन्मूलन कर दिया और प्रतिशोध तथा घृणा से युक्त क्रुद्ध लोगों के समक्ष निहत्थे विचरण करते रहे जब मदनलाल ने गांधी जी की एक प्रार्थना सभा में बम गिराया तो वे अविचलित रहे तथा प्रार्थना सभा चालू रखी और श्रोताओं को फटकार भी लगाई कि वह एकदम से डर गए वे नोआखाली और सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों में निःशस्त्र घूमते रहे और अपने शत्रुओं को बुरा से बुरा कर सकने की चुनौती दी यह कुछ इस प्रकार है जैसे कि गांधी जी ने इस आशा में मृत्यु के सामान्य भय को मृत्यु के प्रेम में बदल दिया हो कि उनकी मृत्यु वह प्राप्त कर लेगी जो उनका जीवन नहीं प्राप्त कर पाया।

गांधीजी का साहस केवल शारीरिक ही नहीं था बल्कि नैतिक और राजनीतिक भी था । जब उन्होंने ब्रह्मचर्य करने संबंधी अपने प्रयोग प्रारंभ किए तो बहुत सारे लोगों ने उनकी आलोचना की और उन पर ऐसे प्रयोगों का परित्याग करने के लिए दबाव भी डाला द्य गांधी ने प्रत्युत्तर दिया कि उनका जीवन उनका अपना है और वे इसे जैसा चाहें वैसा जिएंगे तथा वे नहीं चाहते कि दूसरों के मानकों के आधार पर उनके बारे में कोई निर्णय लिया जाए या कोई राय कायम की जाए। एक महत्वपूर्ण अर्थ में जैसा सर्वोच्च साहस गांधी ने अपने जीवन के अंत में प्रदर्शित किया वैसा साहस उनके जीवन में पहले से ही विद्यमान था । जब वे दक्षिण अफ्रीका में थे तो उन्हें भारतीय समुदाय की कायरता और हीन भावना से बहुत आघात लगा । उन्होंने बार–बार भारतीयों से इस स्थिति के विरुद्ध विद्रोह करने का आग्रह किया और उन्हें बताया कि जो लोग कीड़े–मकोड़ों की भांति व्यवहार करते हैं उन्हें कुचलने वालों पर दोषारोपण नहीं करना चाहिए ।

गांधी जी का जीवन अदम्य साहस नैतिक पारदर्शिता और प्रायोगिक जीवंतता की कहानी है । अनेक अवसरों पर उन्होंने यह टिप्पणी की थी कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है । जब तक लोग अपने जीवन के निर्माता होने में खुशी महसूस करेंगे तब तक उन्हें हर हाल में गांधी के जीवन से शिक्षा मिलती रहेगी । एक भीरु संकोची और सामान्य बुद्धि वाले मोहनदास करमचंद गांधी का स्वयं को मात्र अपनी इच्छा–शक्ति के द्वारा महात्मा गांधी में परिणत करने की कहानी लोगों के लिए एक चिरस्थाई रुचि का विषय और अक्षुण्ण बुद्धिमत्ता एवं प्रेरणा का स्रोत है।

संदर्भ सूची

1. भीखू पारेख गांधीज कंटिन्यूइंग रेलेवेंस द गाँधी वे नं.100, विशेषांक, गाँधी फॉउण्डेशन, जार्ज पैक्सटन, 87, बैरिंगटन ड्राइव, ग्लास्गो, G4aES] U-K-, 2009, पृष्ठ 2
2. देखिये, भीखू पारेख, अ न्यू पॉलिटिक्स ऑफ़ आइडेन्टिटीरू पॉलिटिकल प्रिन्सिपल्स फॉर ऐन इंटरडिपेन्डेन्ट वर्ल्ड, पालग्रेव, मैकमिलन, न्यूयॉर्क, 2008, पृष्ठ प.– 317
3. देखिये, तत्रैव
4. देखिये, भीखू पारेख, रीथिंकिंग मल्टीकल्चरलिज़्मरू कल्चरल डाइवर्सिटी एंड पोलिटिकल थ्योरी, हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 2008, पृष्ठ – 329
5. भीखू पारेख, "गांधीज कंटिन्यूइंग रेलेवेंस" द गाँधी वे, ऊपर उद्घृत, पृष्ठ – 3
6. तत्रैव, पृष्ठ– 4